उपसंहार

उपसंहार

मेरे लघु - शोध - प्रबंध का विषय है - "रहीम सतसई : विवेचनात्मक अध्ययन "।

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में अनेक महान कवि हो गये, परंतु उनमें रहीम का स्थान अलग ही है। मध्यकाल में कबीर, तुलसी, जायसी, सूर जैसे अनेक कवि हो गये। यह सब कवि भक्ति को अपनाकर सामान्य जन-जीवन में भक्ति का प्रसार कर रहे थे। लेकिन रहीम ने अपना काव्य नीति पर आधारित लिखकर अपना एक अ लग स्थान बनाया। उनका नीतिकाव्य हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट बना है। रहीम ने अपने नीतिकाव्य द्वारा जीवन की वास्तविकता को व्यक्त किया है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के प्रथम अध्याय मे मैनें रहीम की जीवनी एवं साहित्य कृतियों का परिचय दिया है। इस अध्याय में मैंने अनेक उपलब्ध समीक्षा ग्रंथो के सहारे उनकी प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी प्रामाणिक जीवनी को मैंने संक्षेप में प्रस्तुत किया है। अब्दुर्रहीम खानखाना का जन्म संवत् १७ दिसम्बर १५५६ ई. में बैरमखाँ के घर लाहौर में हुआ था। फिर भी अब्दुर्रहीम खानखाना अपने छोटे और मीठे "रहीम" नाम से ही प्रसिध्द हैं। रहीम के पिता बैरमखाँ का हुमायूँ के समय से ही मुगल दरबार में बडा सम्मान था। रहीम की माँ सुल्ताना बेगम पहले हिन्दू थी बादमें वह मुसलमान बनी थी। रहीम को हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम अपनी माँ की ओर से मिला था।

रहीम चार वर्ष की उम्र में ही अनाथ बन गये। तब सम्राट अकबर ने उनकी शिक्षा - दीक्षा का प्रबंध किया। रहीम ने अरबी, फारसी, तुर्की भाषाओं के साथ - साथ संस्कृत तथा हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया। इतना ही नहीं ज्योतिष, काव्यशास्त्र पर भी उनका अधिकार था। रहीम की शिक्षा

MARR. BAL... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

पूरी होने बाद उनका विवाह बैरमखाँ के विरोधी मिर्जा अजीज की बहन माहबानो से किया गया। माहबानो से रहीम को तीन पुत्र रत्न और दो पुत्रियाँ प्राप्त हुई।

रहीम का व्यक्तित्व आकर्षक था। रहीम के पिता के शत्रु भी उनका यह सौंदर्य स्नेह से देखते थे। इसके साथ ही रहीम सच्चे दानवीर थे, एक अच्छे सेनापति थे। उनमें हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम था। वे दीन-दुर्बल लोगों के आश्रयदाता थे, कोमल हृदय के कवि थे और राजनीतिज्ञ भी थे।

रहीम को जो अनुभव मिले उन अनुभवों को उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया। रहीम ने दोहावली, नगर शोभा, बरवै, मदनाष्टक, फुटकर छंद, श्रृंगार सोरठा, संस्कृत - काव्य आदि प्रसिध्द कृतियाँ लिखीं। उनकी सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे एक बहुमुखी काव्य प्रतिभा के कवि थे।

द्वितीय अध्याय में मैंने रहीम के समय की विभिन्न परिस्थितियों का विचार किया है। जिस समय रहीम का जन्म हुआ था, वह काल सम्राट अकबर का काल था। यह काल संघर्ष का काल था। मुगल सम्राट अपना साम्राज्य विस्तार कर रहे थे। राजनीतिक दृष्टि से यह काल अराजकता का था। सामाजिक परिस्थिति भी अच्छी नहीं थी। यहाँ के लोगों पर अत्याचार किये जा रहे थे। मुगल सम्राट भोग - विलासी थे। धार्मिक क्षेत्र में अनाचार फैला था। जाति के बंधन कडे हुए थे। अनेक संप्रदाय समाज में निर्माण हुए थे। सम्राटों के भोग-विलास के कारण आर्थिक परिस्थिति भी अच्छी नहीं थी। परंतु सांस्कृतिक परिस्थिति में संगीत, कला, चित्रकला में समन्वय होने लगा था।

तीसरे अध्याय में मैंने रहीम के नीतिकाव्य के मूल स्त्रोतों का विचार किया है। रहीम के नीतिकाव्य के स्त्रोत तीन हैं - लोक-तत्व, भक्ति तत्व और प्रकृति तत्व। इन तत्वों के आधार पर रहीम ने अपना नीतिकाव्य लिखा है। लोक - तत्व में रहीम ने सामान्य ग्रामीण जीवन के उदाहरण लेकर अपने नीति के दोहे लिखे हैं। इसमें व्रत, उपवास, त्यौहार, संस्कार, रीति-रिवाज, जादू-टोना आदि का वर्णन है। साथ ही अंधविश्वासों, रूढियों आदि का वर्णन किया है। रहीम मुस्लीम जाति के थे, फिर भी उन्होंने भक्ति-तत्व में हिन्दू देवी-देवताओं की स्तुति की है। गंगा नदी, गणेश, हनुमान, राम, कृष्ण के प्रति रहीमने भक्ति भावना प्रकट की है। रहीम ने प्रकृति तत्व में प्रकृति से ही उदाहरण लेकर अपने नीति के विचार व्यक्त किये हैं। सागर-नदी, नगर - ग्राम, विष-चन्दन, ग्रीष्म-शरद, मणि-मौक्तिक, चन्द्र-चकोर, पशु-पक्षी, जल-मीन, फल-फूल, कूप-तडाग, दादुर-मोर, हल्दि-चूना, मेहँदी-रंग आदि प्रकृति से संबंधित वर्णन आये हैं।

चतुर्थ अध्याय में मैंने रहीम के नीतिकाव्य का सोदाहरण परिचय दिया है। रहीम ने अनेक विषयों को लेकर काव्य लिखा है। उनके काव्य में धर्मनीति, अर्थनिती, कामनीति, मोक्षनिति, भावनीति का विवेचन हुआ है। इसके साथ ही श्रृंगार, शांत भाव, हास्य-व्यंग्य-विनोद भाव, भक्ति भाव, संयोग वर्णन वियोग वर्णन, बीभत्स भाव, वीर-रस का वर्णन, व्यावहारिकता, ऐश्वर्य का वर्णन, दान के बारेमें विचार, सन्मान - असम्मान का वर्णन, परोपकार सत्संगति, कुसंग, समय, प्रकृति काव्य आदि अनेक विषयोंका वर्णन हुआ है।

रहीम ने अपने काव्य में धर्म का संक्षिप्त वर्णन किया है। उनकी धर्मनीति कर्तव्य - परायणता की नीति है। अर्थनीति में उन्होंने अधर्म मार्ग से प्राप्त किए हुए धन का विरोध किया है। साथ ही बुरे समय में धन का महत्व भी बताया है। रहीम ने कामनीति में श्रृंगार का सुंदर वर्णन किया है पर कहीं भी अश्लीलता नही आने दी। मोक्ष पर भी रहीम ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

श्रृंगार भाव में रहीम ने सच्चे प्रेम की सराहना की है। प्रेम की अग्नि को वे विचित्र मानते हैं। एक बार यह आग लगने से मिटती नहीं। शांत भाव द्वारा रहीम ने ईश्वर की प्रार्थना करने को कहा है। हास्य - व्यंग्य-विनोद भाव द्वारा अनमेल विवाह पर रहीम ने व्यंग्य किया है। रहीम वीर योध्दा थे, इसी कारण उनके काव्य में वीर रस के कई उदाहरण आये हैं। साथ ही युध्द भूमि पर उन्होंने जो दृश्य देखे थे, उनका भी वर्णन किया है। रहीम ने अपने काव्य के जरिये व्यावहारिक बातों का भी वर्णन किया है। ऐश्वर्य-संपत्ति का वर्णन करते हुए उन्होंने लक्ष्मी को चंचल कहा है। फिर भी धन के बिना हमारा काम नहीं होता यह भी उन्होंने व्यक्त किया है। रहीम ने दान को अपने जीवन में अधिक महत्व दिया है। दानहीन जीवन को वे व्यर्थ मानते थे। जहाँ सम्मान मिलता है वहाँ आदमी को जाना चाहिए ऐसा वे सूचित करते हैं। परोपकार के बारेमें रहीम ने मेहँदी का उदाहरण दिया है। सत्संगति के बारेमें विचार व्यक्त करते हुए रहीम ने चन्दन और जहरीले सर्प का उदाहरण दिया है। कुसंग के कारण अच्छे व्यक्तियों को भी बुरा कहा जाता है। इसके लिए रहीम ने शराब बेचनेवाली का और दूध का उदाहरण दिया है। साथ ही रहीम ने प्राकृतिक घटनाओं से नैतिक निष्कर्ष निकाले हैं। कमल और सूर्य, चन्द्र और तारे, चन्दन और सर्प आदि प्राकृतिक उदाहरणों से रहीम ने अपने नीति के बारेमें विचार व्यक्त किए हैं।

पाँचवे अध्याय में मैंने रहीम के नीतिकाव्य के साहित्यिक सौन्दर्य पर विचार किये हैं। रहीम ने अपने काव्य के लिए अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं का प्रयोग किया हैं। साथ ही विभिन्न शैलियों का भी प्रयोग रहीम ने अपने काव्य में किया हैं। जैसे - रहीम की प्रिय दृष्टान्त शैली, तथ्य कथनात्मक शैली, संवाद शैली, परिगणनात्मक शैली, अन्योक्ति शैली, सुबोध शैली आदि विविध शैलियों का प्रयोग उन्होंने किया है।

रहीम ने अपने काव्य में छन्द एवं अलंकारों का सहज प्रयोग किया है। रहीम के बरवै, सवैया, घनाक्षरी, पद, छप्पय, सोरठा, दोहा आदि छन्द रहीम के काव्य में दिखाई देते हैं।

रहीम के काव्य में अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। जैसे - अनुप्रास , यमक अलंकार, श्लेष अलंकार, पुनरूक्ति प्रकाश, वीप्सा अलंकार, भाषासम अलंकार, अर्थालंकार, उपमा अलंकार, रूपक अलंकार, निदर्शना अलंकार, स्वभावोक्ति अलंकार लोकोक्ति अलंकार, सहोक्ति अलंकार, असंगति अलंकार, तद्गुण अलंकार आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

रहीम ने अपने काव्य में दृष्टान्त शैली का अधिक प्रयोग किया है। उनके अधिकांश दृष्टान्त महाभारत, रामायण, पुराण आदि के प्रसंगों पर आधारित हैं। तथ्यकथनात्मक शैली नीतिकाव्य की प्रमुख शैली है, परंतु रहीम ने इस शैली का अधिक प्रयोग नही किया है। वर्णनात्मक शैली नीरस होने के कारण इसका उपयोग रहीम ने अधिक नहीं किया है। प्रश्न शैली में प्रश्न पूछे जाते है। प्रश्नोत्तर शैली में प्रश्न और उसका उत्तर होता है। संवाद शैली में प्रश्न करनेवाला एक और उसका उत्तर देनेवाला दूसरा होता है। अन्योक्ति शैली नीति कवियों की प्रिय शैली है। रहीम जन-जन के कवि थे उन्होंने जन - जीवन के उपयोग संबंधी नीति को जन-सुलभ भाषा में गाया है। इसके लिए सुबोध शैली का प्रयोग किया है।

रहीम बरवै छन्द के आदि जनक माने जाते हैं। सवैया भी देखने को मिलते हैं। रहीम ने पदों का प्रयोग अपने काव्य में अधिक नहीं किया है। रहीम का छप्पय छन्द "रहिमन विलास" तथा "रहीम रत्न-नावली" मे प्राप्त होता है। रहीम ने सोरठे छन्द का प्रयोग भी अपने काव्य में किया है। दोहा रहीम के काव्य का प्रधान छन्द है। विषय की दृष्टि से भक्ति, शृंगारादि कि अपेक्षा अधिकता नीति के दोहों की है।

रहीम के नीति-काव्य में अलंकारों का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। अनुप्रास अलंकार में रहीम ने चूना, खाँसी, खून का उदाहरण दिया है। यमक अलंकार में मुक्ताहार टूटने के द्वारा मन का टूटना इस भाव का उदाहरण दिया है। श्लेष अलंकार में आदमी की प्रतिष्ठा और मोती, चून का उदाहरण दिया है। वीप्सा अलंकार में मनोमालिन्य और प्रेम-भाव उदाहरण द्वारा व्यक्त किये हैं। भाषासम अलंकार में मदनाष्टक का उदाहरण है। उपमा अलंकार में अमृत ऐसे बचन का उदाहरण दिया है। रूपक अलंकार में श्याम और राधा के मन में कामभावना उद्दीप्त होने का उदाहरण दिया है। लोकोक्ति अलंकार में पानी में रहकर मगर के साथ बैर नहीं करना चाहिए यह उदाहरण दिया है। असंगति अलंकार में श्याम और राधा का उदाहरण दिया है। इस प्रकार रहीम के नीतिकाव्य में अलंकार और उनके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

रहीम के काव्य में शब्द -शक्ति, मुहावरों का प्रयोग देखने को मिलता है। रहीम ने एक दोहे में ही एक से अधिक मुहावरों का प्रयोग किया है। रहीम ने जो शब्द - शक्तियों का प्रयोग अपने काव्य में किया है वे तीन हैं - अभिधा शक्ति, लक्षणा शक्ति और व्यजना शक्ति।

रहीम का नीतिकाव्य अभिधा शक्ति पर ही आधारित है। साथ ही लक्षणा शक्ति के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। रहीम के काव्य में व्यंजना शक्ति के भी उदाहरण प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं रहीम ने अपने काव्य में कल्पना और ध्वनि का भी प्रयोग किया है।

प्रस्तुत प्रबंध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे, उनके निष्कर्ष निम्न प्रकार निकाले गये हैं।

१) रहीम के काल की परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी कि सभी ओर अराजकता थी। परकीय आक्रमण बार - बार हो रहे थे। इससे सामान्य जनता

त्रस्त बनी थी। विदेशी शासक जुल्मी, अत्याचारी थे। सामान्य जनता पर विदेशी शासक अत्याचार करते थे। साथ ही यहाँ के सम्राट भोग-विलास में मग्न थे। जनता की ओर उनका ध्यान नहीं था। यहाँ के सम्राट जो भी सुंदर स्त्री देखते उसे उठा ले जाते थे। इससे नैतिक मूल्यों का -हास हो गया था।

एक ओर उस समय समाज में भक्ति मार्ग का उदय हो चुका था। लोग देवी - देवताओं की पूजा - अर्चा करने में लगे हुए थें। धार्मिक बातों में भी अनाचार फैल चुका था। ऐसे में समाज को एक सही मार्ग दिखाने के लिए, नैतिक मूल्यों का फिरसे निर्माण करने के लिए सामान्य से सामान्य उदाहरणों द्वारा अपने नीति के विचार व्यक्त करके रहीम ने अपना नीतिकाव्य लोगों के सामने रखा।

इस नीतिकाव्य में उनको जो अनुभव मिले उनका ही वर्णन रहीम ने किया है। परंतु यह अनुभव आम व्यक्तियों के जीवन में कम- अधिक स्थिति में प्राप्त होते हैं, इसे रहीम जानते थे। इसलिए उन्हें पढकर सामान्य से सामान्य व्यक्ति नीति-मार्ग पर चला जाय इसे ध्यान में रखते हुए रहीम ने भक्तिकाल में नीति-काव्य की रचना की।

२) रहीम के काल में राजनीतिक , सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी। यहाँ के राजा चैन - विलास में दंग थे। नारी के प्रति उनकी दृष्टि अच्छी नहीं थी। सामान्य जनता के प्रश्नों की ओर उनका ध्यान नहीं था। लोग दिशाहीन बन चुके थे। स्त्रियों पर अत्याचार हो रहे थे। इसी कारण पर्दा पध्दति निर्माण हुई थी। जाँति - पाँति के बंधन कडे हुए थे।

विदेशी आक्रमण बार-बार हो रहे थे। लोगों की हालत बहुत ही खराब थी। समाज में अंधविश्वास, गलत परंपरा बढती जा रही थी। इन

बातों को रहीम ने देखा और समझा। तब जनता को नैतिक पतन से उभारने के लिए, समाज में नैतिकता निर्माण करने की दृष्टि से रहीम ने नीति _- काव्य लिखा। समाज के साथ - साथ देश को भी नैतिक दृष्टि से सबल बनाने के उद्देश्य से रहीम ने नीति - काव्य का निर्माण किया।

३) रहीम ने अपना नीतिकाव्य लिखते समय सामान्य जनता को सामने रखकर काव्य लिखा लोग अनाडी, अनपढ थे, उनके नीतिकथन लोग आसानी से समझ जायें ऐसे उदाहरण उन्होंने दिये रहीम ने नीति के विचार व्यक्त करने के लिए अपने अनुभवों और लोगों के अनुभवों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। जैसे - घट-रस्सी, चन्दन-सर्प, सूर्य - चन्द्र, नदी - सरोवर, कमल, चकोर, कुआँ, दीपक, पशु - पक्षी आदि। इसी कारण रहीम का काव्य और उनके विचार अनपढ लोग भी आसानी से समझते हैं। कहीं भी विचारों का उलझाव, शब्दों का चमत्कार नहीं है। रहीम का नीतिकाव्य आसानी से समझ में आता है। यह रहीम के काव्य की विशेषता है।

४) रहीम ने अपने नीतिकाव्य को लिखते समय महाभारत और रामायण के उदाहरण दिये हैं। रहीम ने हिन्दू धर्म - ग्रंथों का अध्ययन किया था। साथ ही रहीम को हिन्दू धर्म के प्रति आस्था थी। उसकाल में हिन्दू मुस्लीम जाति में झगडे हो रहे थे। रहीम स्वत: मुस्लिम जाति के थे। फिर भी उनके मन में हिन्दू धर्म के प्रति प्यार और आदर था। साथ ही हिन्दू -मुस्लीम में एकता निर्माण करने के लिए रहीम ने हिन्दू-धर्म ग्रंथों के उदाहरण दिये हैं। जैसे - दोहावली" की शुरुआत में गंगा नदी की स्तुति की है, पुरुषार्थ का उदाहरण देते हुए भीम का उदाहरण दिया है ,समय आने पर नलराज रथवाहक बनता है, भाग्य के कारण राम वनवास चले जाते हैं, मित्रता का उदाहरण देते हुए कृष्ण - सुदामा की मित्रता की सराहना की है। हनुमान का उदाहरण दिया है।

रहीम के समस्त काव्य में वे मुस्लीम होने का उदाहरण नहीं मिलता है। केवल इतना ही कहना उचित होगा कि रहीम हिन्दू, हिन्दी तथा हिन्दुस्तान की परम्पराओं के सच्चे निष्ठावान कवि थे।

मध्ययुग के कवि अपने अपने क्षेत्र के गौरव हैं। जायसी निर्गुण प्रेमधारा और सूफी - काव्य - परम्परा के श्रेष्ठ कवि हैं, कबीर निर्गुण ज्ञानमार्गी शाखा के और संत - काव्य- परम्परा के श्रेष्ठ कवि हैं, सगुण मार्गी कृष्णभक्त कवियों में सूर श्रेष्ठ कवि हैं, रामभक्त कवियों में तुलसी श्रेष्ठ हैं। रीति - आचार्यों में केशव का स्थान सर्वोन्नत है और रीति सिध्द शृंगारिक काव्य-रचना में बिहारी। जिस प्रकार ये सब महाकवि अपने - अपने क्षेत्र में अद्वितिय हैं, उसी प्रकार नीति - काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है। रहीम हिन्दी-नीति - काव्य के सम्राट हैं। हम इस लघुशोध प्रबंध को, रहीम का दोहा गोते हुए समाप्त करें -

रहिमन रिस को छाँडि कै, करो गरीबी भेस।
मीठौ बोलो नय चलो, सबै तुम्हारौ देस।।